CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतर्यात्रा

-ग्रन्थालय
रौंदी, वाराणसी-५
क-3/25

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

०२६ प्रथम संस्करण ५,०००
०२७ द्वितीय संस्करण १०,०००

मूल्य छः पैसे

पो० गीताप्रेस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

३-३/२५

आम्नाय--ग्रन्थाल
परमनिधि, करौंदी

श्रीहरिः

निवेदन

श्रीमद्भागवतके चतुर्थ स्कन्धका 'श्रीरुद्रगीत' प्रसिद्ध है। इसका भगवद्भक्ति, ज्ञान आदिके साधनके रूपमें तो सदा प्रयोग होता ही है—संतानप्राप्ति, विपत्तिनाश, शुभ मनोरथकी पूर्ति तथा गृह-कलह-नाश आदि कार्योंकी सफलताके लिये भी इसका पाठ किया-कराया जाता है और उससे बहुत लाभ होता है। बहुत-से सज्जनोंकी, पाठ करनेकी दृष्टिसे, इसे अलग प्रकाशित करनेकी माँग बहुत दिनोंसे थी। इसीसे इसको पुस्तिकाके रूपमें प्रकाशित किया जा रहा है। श्रद्धापूर्वक केवल मूल श्लोकोंका ही (अथवा इच्छा हो तो अर्थ-सहित) पाठ करना चाहिये।

निवेदक—प्रकाशक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीरुद्रगीत

राजा प्राचीनबर्हिके पुत्र प्रचेतागण पिताकी आज्ञासे तप करनेके लिये जा रहे थे। तब मार्गमें एक विशाल सुन्दर सरोवरमेंसे निकलकर नीलकण्ठ भगवान् शंकरने उन्हें दर्शन दिये और प्रसन्न होकर उनसे कहा—

अथ भागवता यूयं प्रियाः स्थ भगवान् यथा।
न मद्भागवतानां च प्रेयानन्योऽस्ति कर्हिचित्॥
इदं विविक्तं जप्तव्यं पवित्रं मङ्गलं परम्।
निःश्रेयसकरं चापि श्रूयतां तद्ददामि वः॥
(श्रीमद्भागवत ४। २४। ३०-३१)

'तुमलोग भगवान्‌के भक्त होनेके कारण मुझे भगवान्‌के समान ही प्रिय हो। इसी प्रकार भगवद्भक्तोंको भी मुझसे बढ़कर और कोई कभी प्रिय नहीं होता। अब मैं तुम्हें एक बड़ा ही पवित्र, मङ्गलमय और कल्याणकारी स्तोत्र सुनाता हूँ। इसका तुमलोग शुद्ध भावसे जप करना।'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तदनन्तर भगवान् शंकरने उनको जो स्तोत्र सुनाया, वही 'रुद्रगीत'के नामसे प्रसिद्ध है। वही नीचे अर्थ-सहित दिया जा रहा है—

श्रीरुद्र उवाच

जितं त आत्मविद्धुर्य स्वस्तये स्वस्तिरस्तु मे ।
भवता राधसा राद्धं सर्वस्मा आत्मने नमः ॥ १ ॥
नमः पङ्कजनाभाय भूतसूक्ष्मेन्द्रियात्मने ।
वासुदेवाय शान्ताय कूटस्थाय स्वरोचिषे ॥ २ ॥
संकर्षणाय सूक्ष्माय दुरन्तायान्तकाय च ।
नमो विश्वप्रबोधाय प्रद्युम्नायान्तरात्मने । ३ ॥
नमो नमोऽनिरुद्धाय हृषीकेशेन्द्रियात्मने ।
नमः परमहंसाय पूर्णाय निभृतात्मने ॥ ४ ॥
स्वर्गापवर्गद्वाराय नित्यं शुचिषदे नमः ।
नमो हिरण्यवीर्याय चातुर्होत्राय तन्तवे ॥ ५ ॥
नम ऊर्ज इषे त्रय्याः पतये यज्ञरेतसे ।
वृष्णिदाय च जीवानां नमः सर्वरसात्मने ॥ ६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्वसत्त्वात्मदेहाय विशेषाय स्वयीयसे ।
नमस्त्रैलोक्यपालाय सहओजोबलाय च ॥ ७ ॥
अर्थलिङ्गाय नभसे नमोऽन्तर्बहिरात्मने ।
नमः पुण्याय लोकाय अमुष्मै भूरिवर्चसे ॥ ८ ॥
प्रवृत्ताय निवृत्ताय पितृदेवाय कर्मणे ।
नमोऽधर्मविपाकाय मृत्यवे दुःखदाय च ॥ ९ ॥
नमस्त आशिषामीश मनवे कारणात्मने ।
नमो धर्माय बृहते कृष्णायाकुण्ठमेधसे ।
पुरुषाय पुराणाय सांख्ययोगेश्वराय च ॥१०॥
शक्तित्रयसमेताय मीढुषेऽहंकृतात्मने ।
चेतआकूतिरूपाय नमो वाचोविभूतये ॥११॥

भगवान् रुद्र स्तुति करने लगे—भगवन् ! आपका उत्कर्ष उच्चकोटिके आत्मज्ञानियोंके कल्याणके लिये—निजानन्द-लाभके लिये है, उससे मेरा भी कल्याण हो ! आप सर्वदा अपने निरतिशय परमानन्द-स्वरूपमें ही स्थित रहते हैं, ऐसे सर्वात्मक आत्मस्वरूप आपको

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीकृष्ण हैं; आप सब प्रकारकी कामनाओंकी पूर्तिके कारण, साक्षात् मन्त्रमूर्ति और महान् धर्मस्वरूप हैं। आपकी ज्ञानशक्ति किसी भी प्रकार कुण्ठित होनेवाली नहीं है; आपको नमस्कार है, नमस्कार है॥ १० ॥ आप ही कर्ता, करण और कर्म—तीनों शक्तियोंके एकमात्र आश्रय हैं; आप ही अहंकारके अधिष्ठाता रुद्र हैं; आप ही ज्ञान और क्रियास्वरूप हैं तथा आपसे ही परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी—चार प्रकारकी वाणीकी अभिव्यक्ति होती है; आपको नमस्कार है॥ ११ ॥

दर्शनं नो दिदृक्षूणां देहि भागवतार्चितम्।
रूपं प्रियतमं स्वानां सर्वेन्द्रियगुणाञ्जनम् ॥१२॥
स्निग्धप्रावृड्घनश्यामं सर्वसौन्दर्यसंग्रहम्।
चार्वायतचतुर्बाहुं सुजातरुचिराननम् ॥१३॥
पद्मकोशपलाशाक्षं सुन्दरभ्रु सुनासिकम्।
सुद्विजं सुकपोलास्यं समकर्णविभूषणम् ॥१४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रीतिप्रहसितापाङ्गमलकैरुपशोभितम् ।
लसत्पङ्कजकिञ्जल्कदुकूलं मृष्टकुण्डलम् ॥१५॥
स्फुरत्किरीटवलयहारनूपुरमेखलम् ।
शङ्खचक्रगदापद्ममालामण्युत्तमर्द्धिमत् ॥१६॥
सिंहस्कन्धत्विषो बिभ्रत्सौभगग्रीवकौस्तुभम् ।
श्रियानपायिन्याक्षिप्तनिकषाश्मोरसोल्लसत् ॥१७॥
पूररेचकसंविग्नवलिवल्गुदलोदरम् ।
प्रतिसंक्रामयद्विश्वं नाभ्याऽऽवर्तगभीरया ॥१८॥
श्यामश्रोण्यधिरोचिष्णुदुकूलस्वर्णमेखलम् ।
समचार्वङ्घ्रिजङ्घोरुनिम्नजानुसुदर्शनम् ॥१९॥

पदा शरत्पद्मपलाशरोचिषा
नखद्युभिर्नोऽन्तरघं विधुन्वता ।
प्रदर्शय स्वीयमपास्तसाध्वसं
पदं गुरो मार्गगुरुस्तमोजुषाम् ॥२०॥

प्रभो ! हमें आपके दर्शनोंकी अभिलाषा है; अतः आपके भक्तजन जिसका पूजन करते हैं और जो आपके

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निजजनोंको अत्यन्त प्रिय है, अपने उस अनूप रूपकी आप हमें झाँकी कराइये। आपका वह रूप अपने गुणोंसे समस्त इन्द्रियोंको तृप्त करनेवाला है॥ १२॥ वह वर्षाकालीन मेघके समान स्निग्ध श्याम और सम्पूर्ण सौन्दर्योंका सार-सर्वस्व है। सुन्दर चार विशाल भुजाएँ, महामनोहर मुखारविन्द, कमलदलके समान नेत्र, सुन्दर भौंहें, सुघड़ नासिका, मनमोहिनी दन्तपंक्ति, अमोल-कपोलयुक्त मनोहर मुखमण्डल और शोभाशाली समान कर्णयुगल हैं॥ १३-१४॥ प्रीतिपूर्ण उन्मुक्त हास्य, तिरछी चितवन, काली-काली घुँघराली अलकें, कमलकुसुमकी केसरके समान फहराता हुआ पीताम्बर, झिलमिलाते हुए कुण्डल, चमचमाते हुए मुकुट, कङ्कण, हार, नूपुर और मेखला आदि विचित्र आभूषण तथा शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म, वनमाला और कौस्तुभमणिके कारण उसकी अपूर्व शोभा है॥ १५-१६॥ उसके सिंहके समान स्थूल कंधे हैं—जिनपर हार, केयूर एवं कुण्डलादिकी कान्ति झिलमिलाती रहती है—तथा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कौस्तुभमणिकी कान्तिसे सुशोभित मनोहर ग्रीवा है। उसका श्यामल वक्षःस्थल स्वर्णके रंगकी रेखाके रूपमें लक्ष्मी-जीका नित्य निवास होनेके कारण कसौटीकी शोभाको भी मात करता है ॥ १७ ॥ उसका त्रिवलीसे सुशोभित, पीपलके पत्तेके समान सुडौल उदर श्वासके आने-जानेसे हिलता हुआ बड़ा ही मनोहर जान पड़ता है। उसमें जो भँवरके समान चक्करदार नाभि है, वह इतनी गहरी है कि उससे उत्पन्न हुआ यह विश्व मानो फिर उसीमें लीन होना चाहता है ॥ १८ ॥ श्यामवर्ण कटिभागमें पीताम्बर और सुवर्णकी मेखला शोभायमान है। समान और सुन्दर चरण, पिंडली, जाँघ और घुटनोंके कारण आपका दिव्य विग्रह बड़ा ही सुघड़ जान पड़ता है ॥ १९ ॥ आपके चरणकमलोंकी शोभा शरद् ऋतुके कमल-दलकी कान्तिका भी तिरस्कार करती है। उनके नखोंसे जो प्रकाश निकलता है, वह जीवोंके हृदया-न्धकारको तत्काल नष्ट कर देता है। हमें आप कृपा करके भक्तोंके भयहारी एवं आश्रयस्वरूप उसी रूपका दर्शन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कराइये। जगद्गुरो! हम अज्ञानावृत प्राणियोंको अपनी प्राप्तिका मार्ग बतलानेवाले आप ही हमारे गुरु हैं ॥२०॥

एतद्रूपमनुध्येयमात्मशुद्धिमभीप्सताम् ।
यद्भक्तियोगोऽभयदः स्वधर्ममनुतिष्ठताम् ॥२१॥
भवान् भक्तिमता लभ्यो दुर्लभः सर्वदेहिनाम् ।
स्वाराज्यस्याप्यभिमत एकान्तेनात्मविद्गतिः ॥२२॥
तं दुराराध्यमाराध्य सतामपि दुरापया ।
एकान्तभक्त्या को वाञ्छेत्पादमूलं विना बहिः ॥२३॥
यत्र निर्विष्टमरणं कृतान्तो नाभिमन्यते ।
विश्वं विध्वंसयन् वीर्यशौर्यविस्फूर्जितभ्रुवा ॥२४॥
क्षणार्धेनापि तुलये न स्वर्गं नापुनर्भवम् ।
भगवत्सङ्गिसङ्गस्य मर्त्यानां किमुताशिषः ॥२५॥
अथानघाङ्घ्रेस्तव कीर्तितीर्थयो-
रन्तर्बहिःस्नानविधूतपाप्मनाम् ।
भूतेष्वनुक्रोशसुसत्त्वशीलिनां
स्यात्संगमोऽनुग्रह एष नस्तव ॥२६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न यस्य चित्तं बहिरर्थविभ्रमं
तमोगुहायां च विशुद्धमाविशत् ।
यद्भक्तियोगानुगृहीतमञ्जसा
मुनिर्विचष्टे ननु तत्र ते गतिम् ॥२७॥
यत्रेदं व्यज्यते विश्वं विश्वस्मिन्नवभाति यत् ।
तत् त्वं ब्रह्म परं ज्योतिराकाशमिव विस्तृतम् ॥२८॥

प्रभो ! चित्तशुद्धिकी अभिलाषा रखनेवाले पुरुषको आपके इस रूपका निरन्तर ध्यान करना चाहिये; इसकी भक्ति ही स्वधर्मका पालन करनेवाले पुरुषको अभय करनेवाली है ॥ २१ ॥ स्वर्गका शासन करनेवाला इन्द्र भी आपको ही पाना चाहता है तथा विशुद्ध आत्मज्ञानियोंकी गति भी आप ही हैं । इस प्रकार आप सभी देहधारियोंके लिये अत्यन्त दुर्लभ हैं, केवल भक्तिमान् पुरुष ही आपको पा सकते हैं ॥ २२ ॥ सत्पुरुषोंके लिये भी दुर्लभ अनन्य भक्तिसे भगवान्‌को प्रसन्न करके, जिनकी प्रसन्नता किसी अन्य साधनासे दुस्साध्य है, ऐसा कौन होगा जो उनके चरणतलके

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अतिरिक्त और कुछ चाहेगा ॥ २३ ॥ जो काल अपने अदम्य उत्साह और पराक्रमसे फड़कती हुई भौंहके इशारेसे सारे संसारका संहार कर डालता है, वह भी आपके चरणोंकी शरणमें गये हुए प्राणीपर अपना अधिकार नहीं मानता ॥ २४ ॥ ऐसे भगवान्‌के प्रेमी भक्तोंका यदि आधे क्षणके लिये भी समागम हो जाय तो उसके सामने मैं स्वर्ग और मोक्षको कुछ नहीं समझता, फिर मर्त्यलोकके तुच्छ भोगोंकी तो बात ही क्या है ॥ २५ ॥ प्रभो ! आपके चरण सम्पूर्ण पाप-राशिको हर लेनेवाले हैं । हम तो केवल यही चाहते हैं कि जिन लोगोंने आपकी कीर्ति और तीर्थ (गङ्गाजी) में आन्तरिक और बाह्य स्नान करके मानसिक और शारीरिक दोनों प्रकारके पापोंको धो डाला है तथा जो जीवोंके प्रति दया, राग-द्वेषरहित चित्त तथा सरलता आदि गुणोंसे युक्त हैं, उन आपके भक्तजनोंका सङ्ग हमें सदा प्राप्त होता रहे । यही हमपर आपकी बड़ी कृपा होगी ॥ २६ ॥ जिस साधकका चित्त भक्तियोगसे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुगृहीत एवं विशुद्ध होकर न तो बाह्य विषयोंमें भटकता है और न अज्ञानगुहारूप प्रकृतिमें ही लीन होता है, वह अनायास ही आपके स्वरूपका दर्शन पा जाता है ॥ २७ ॥ जिसमें यह सारा जगत् दिखायी देता है और जो स्वयं सम्पूर्ण जगत्में भास रहा है, वह आकाशके समान विस्तृत और परम प्रकाशमय ब्रह्मतत्त्व आप ही हैं ॥ २८ ॥

यो मायया इदं पुरुरूपयास्रजद्
बिभर्ति भूयः क्षपयत्यविक्रियः ।
यद्भेदबुद्धिः सदिवात्मदुःस्थया
तमात्मतन्त्रं भगवन् प्रतीमहि ॥२९॥
क्रियाकलापैरिदमेव योगिनः
श्रद्धान्विताः साधु यजन्ति सिद्धये ।
भूतेन्द्रियान्तःकरणोपलक्षितं
वेदे च तन्त्रे च त एव कोविदाः ॥३०॥
त्वमेक आद्यः पुरुषः सुप्तशक्ति-
स्तया रजस्सत्त्वतमो विभिद्यते ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महानहं खं मरुदग्निवार्धराः
सुरर्षयो भूतगणा इदं यतः ॥३१॥
सृष्टं स्वशक्त्येदमनुप्रविष्ट-
श्चतुर्विधं पुरमात्मांशकेन ।
अथो विदुस्तं पुरुषं सन्तमन्त-
र्भुङ्क्ते हृषीकैर्मधु सारघं यः ॥३२॥

भगवन् ! आपकी माया अनेक प्रकारके रूप धारण करती है। इसीके द्वारा आप इस प्रकार जगत्की रचना, पालन और संहार करते हैं, जैसे यह कोई सद्वस्तु हो। किंतु इससे आपमें किसी प्रकारका विकार नहीं आता। मायाके कारण दूसरे लोगोंमें ही भेदबुद्धि उत्पन्न होती है, आप परमात्मापर वह अपना प्रभाव डालनेमें असमर्थ होती है। आपको तो हम परम स्वतन्त्र ही समझते हैं॥ २९॥ आपका स्वरूप पञ्चभूत, इन्द्रिय और अन्तःकरणके प्रेरकरूपसे उपलक्षित होता है। जो कर्मयोगी पुरुष सिद्धि प्राप्त करनेके लिये तरह-तरहके कर्मोंद्वारा आपके इस सगुण-साकार स्वरूपका

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रद्धापूर्वक भलीभाँति पूजन करते हैं, वे ही वेद और शास्त्रोंके सच्चे मर्मज्ञ हैं ॥ ३० ॥ प्रभो ! आप ही अद्वितीय आदिपुरुष हैं । सृष्टिके पूर्व आपकी मायाशक्ति सोयी रहती है । फिर उसीके द्वारा सत्त्व, रज और तमरूप गुणोंका भेद होता है और इसके बाद उन्हीं गुणोंसे महत्तत्त्व, अहंकार, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, देवता, ऋषि और समस्त प्राणियोंसे युक्त इस जगत्की उत्पत्ति होती है ॥ ३१ ॥ फिर आप अपनी ही मायाशक्तिसे रचे हुए इन जरायुज, अण्डज, स्वेदज और उद्भिज्जभेदसे चार प्रकारके शरीरोंमें अंशरूपसे प्रवेश कर जाते हैं और जिस प्रकार मधुमक्खियाँ अपने ही उत्पन्न किए हुए मधुका आस्वादन करती हैं, उसी प्रकार वह आपका अंश उन शरीरोंमें रहकर इन्द्रियोंके द्वारा इन तुच्छ विषयोंको भोगता है । आपके उस अंशको ही पुरुष या जीव कहते हैं ॥ ३२ ॥

स एष लोकानतिचण्डवेगो
विकर्षसि त्वं खलु कालयानः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूतानि भूतैरनुमेयतत्त्वो
घनावलीर्वायुरिवाविषह्यः ॥३३॥
प्रमत्तमुच्चैरितिकृत्यचिन्तया
प्रवृद्धलोभं विषयेषु लालसम् ।
त्वमप्रमत्तः सहसाभिपद्यसे
क्षुल्लेलिहानोऽहिरिवाखुमन्तकः ॥३४॥
कस्त्वत्पदाब्जं विजहाति पण्डितो
यस्तेऽनमानव्ययमानकेतनः ।
विशङ्क्यासद्गुरुर्वर्तति सद्
विनोपपत्तिं मनवश्चतुर्दश ॥३५॥
अथ त्वमसि नो ब्रह्मन् परमात्मन् विपश्चिताम् ।
विश्वं रुद्रभयध्वस्तमकुतश्चिद्भया गतिः ॥३६॥

प्रभो ! आपका तत्त्वज्ञान प्रत्यक्षसे नहीं, अनुमानसे होता है । प्रलयकाल उपस्थित होनेपर कालस्वरूप आप ही अपने प्रचण्ड एवं असह्य वेगसे पृथ्वी आदि भूतोंको अन्य भूतोंसे विचलित कराकर समस्त लोकोंका संहार कर देते हैं—जैसे वायु अपने असहनीय एवं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रचण्ड झोंकोंसे मेघोंके द्वारा ही मेघोंको तितर-बितर करके नष्ट कर डालती है ॥ ३३ ॥ भगवन् ! यह मोहग्रस्त जीव प्रमादवश हर समय इसी चिन्तामें रहता है कि अमुक कार्य करना है । इसका लोभ बढ़ गया है और इसे विषयोंकी ही लालसा बनी रहती है । किंतु आप सदा ही सजग रहते हैं; भूखसे जीभ लपलपाता हुआ सर्प जैसे चूहेको चट कर जाता है, उसी प्रकार आप अपने कालस्वरूपसे उसे सहसा लील जाते हैं ॥ ३४ ॥ आपकी अवहेलना करनेके कारण अपनी आयुको व्यर्थ माननेवाला ऐसा कौन विद्वान् होगा, जो आपके चरणकमलोंको बिसारेगा ? इसकी पूजा तो कालकी आशङ्कासे ही हमारे पिता ब्रह्माजी और स्वायम्भुव आदि चौदह मनुओंने भी बिना कोई विचार किये केवल श्रद्धासे ही की थी ॥ ३५ ॥ ब्रह्मन् ! इस प्रकार सारा जगत् रुद्ररूप कालके भयसे व्याकुल है । अतः परमात्मन् ! इस तत्त्वको जाननेवाले

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हमलोगोंके तो इस समय आप ही सर्वथा भयशून्य आश्रय हैं ॥ ३६ ॥

इदं जपत भद्रं वो विशुद्धा नृपनन्दनाः ।
स्वधर्ममनुतिष्ठन्तो भगवत्यर्पिताशयाः ॥३७॥
तमेवात्मानमात्मस्थं सर्वभूतेष्ववस्थितम् ।
पूजयध्वं गृणन्तश्च ध्यायन्तश्चासकृद्धरिम् ॥३८॥
योगादेशमुपासाद्य धारयन्तो मुनिव्रताः ।
समाहितधियः सर्व एतदभ्यसताहृताः ॥३९॥
इदमाह पुरास्माकं भगवान् विश्वसृक्पतिः ।
भृग्वादीनामात्मजानां सिसृक्षुः संसिसृक्षताम् ॥४०॥
ते वयं नोदिताः सर्वे प्रजासर्गे प्रजेश्वराः ।
अनेन ध्वस्ततमसः सिसृक्ष्मो विविधाः प्रजाः ॥४१॥
अथेदं नित्यदा युक्तो जपन्नवहितः पुमान् ।
अचिराच्छ्रेय आप्नोति वासुदेवपरायणः ॥४२॥
श्रेयसामिह सर्वेषां ज्ञानं निःश्रेयसं परम् ।
सुखं तरति दुष्पारं ज्ञाननौर्व्यसनार्णवम् ॥४३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

य इमं श्रद्धया युक्तो मद्गीतं भगवत्स्तवम् ।
अधीयानो दुराराध्यं हरिमाराधयत्यसौ । ४४ ॥
विन्दते पुरुषोऽमुष्माद्यद्यदिच्छत्यसंत्वरन् ।
मद्गीतगीतात्सुग्रीताच्छ्रेयसामेकवल्लभात् ॥४५॥
इदं यः कल्य उत्थाय प्राञ्जलिः श्रद्धयान्वितः ।
शृणुयाच्छ्रावयेन्मर्त्यो मुच्यते कर्मबन्धनैः ॥४६॥
गीतं मयेदं नरदेवनन्दनाः
परस्य पुंसः परमात्मनः स्तवम् ।
जपन्त एकाग्रधियस्तपो महत्
चरध्वमन्ते तत आप्स्यथेप्सितम् ॥४७॥
(श्रीमद्भागवत ४ । २४ । ३३ से ७९ तक)

राजकुमारो ! तुमलोग विशुद्धभावसे स्वधर्मका आचरण करते हुए भगवान्‌में चित्त लगाकर मेरे कहे हुए इस स्तोत्रका जप करते रहो; भगवान् तुम्हारा मङ्गल करेंगे ॥ ३७ ॥ तुमलोग अपने अन्तःकरणमें

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थित उन सर्वभूतान्तर्यामी परमात्मा श्रीहरिका ही बार-बार स्तवन और चिन्तन करते हुए पूजन करो ॥ ३८ ॥ मैंने तुम्हें यह योगादेश नामका स्तोत्र सुनाया है। तुमलोग इसे मनसे धारणकर मुनिव्रतका आचरण करते हुए इसका एकाग्रतासे आदरपूर्वक अभ्यास करो ॥ ३९॥ यह स्तोत्र पूर्वकालमें जगद्विस्तारके इच्छुक प्रजापतियोंके पति भगवान् ब्रह्माजीने प्रजा उत्पन्न करनेकी इच्छावाले हम भृगु आदि अपने पुत्रोंको सुनाया था ॥४० ॥ जब हम प्रजापतियोंको प्रजाका विस्तार करनेकी आज्ञा हुई, तब इसीके द्वारा हमने अपना अज्ञान निवृत्त करके अनेक प्रकारकी प्रजा उत्पन्न की थी ॥ ४१ ॥ अब भी जो भगवत्परायण पुरुष इसका एकाग्र चित्तसे नित्य-प्रति जप करेगा, उसका शीघ्र ही कल्याण हो जायगा ॥ ४२॥ इस लोकमें सब प्रकारके कल्याण-साधनोंमें मोक्षदायक ज्ञान ही सबसे श्रेष्ठ है। ज्ञान-नौकापर चढ़ा हुआ पुरुष अनायास ही इस दुस्तर संसारसागरको

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पार कर लेता है ॥ ४३ ॥ यद्यपि भगवान्‌की आराधना बहुत कठिन है, फिर भी मेरे कहे हुए इस स्तोत्रका जो श्रद्धापूर्वक पाठ करेगा, वह सुगमतासे ही उनकी प्रसन्नता प्राप्त कर लेगा ॥ ४४ ॥ भगवान् ही सम्पूर्ण कल्याणसाधनोंके एकमात्र प्रिय—प्राप्तव्य हैं। अतः मेरे गाये हुए इस स्तोत्रके गानसे उन्हें प्रसन्न करके वह स्थिरचित्त होकर उनसे जो कुछ चाहेगा, प्राप्त कर लेगा ॥ ४५ ॥ जो पुरुष उषाकालमें उठकर इसे श्रद्धापूर्वक हाथ जोड़कर सुनता या सुनाता है, वह सब प्रकारके कर्मबन्धनोंसे मुक्त हो जाता है ॥ ४६ ॥ राजकुमारो ! मैंने तुम्हें जो यह परमपुरुष परमात्माका स्तोत्र सुनाया है, इसे एकाग्रचित्तसे जपते हुए तुम महान् तपस्या करो। तपस्या पूर्ण होनेपर इसीसे तुम्हें अभीष्ट फल प्राप्त हो जायगा ॥ ४७ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नित्य पाठ करनेके लिये कुछ स्तोत्र

मूल्य

श्रीविष्णुसहस्रनाम (शांकरभाष्य)–सटीक, रु० पैसे
पृष्ठ २८०, सचित्र मूल्य ... १.१०

श्रीमहामन्त्रराजस्तोत्रम्–सटीक, सचित्र,
पृष्ठ ५६, मूल्य ... .२५

गङ्गासहस्रनामस्तोत्र–सटीक, पृष्ठ ९६, मूल्य ... .२०

श्रीलक्ष्मीनृसिंहसहस्रनामस्तोत्र–मूल, पृष्ठ ८०, मू० .२०

श्रीरामसहस्रनामस्तोत्र–सटीक, पृष्ठ ८०, मूल्य ... .१८

,, ,, –मूल, पृष्ठ ४८, मूल्य ... .१२

रसभावविमर्शः (श्रीराधामाधवप्रेमतत्त्वम्)–
पृष्ठ ३२, मूल्य ... .१५

श्रीगणेशसहस्रनामस्तोत्र–मूलमात्र, पृष्ठ ६४, मू० .१५

श्रीराधिकासहस्रनामस्तोत्र–मूल, पृष्ठ ६४, मूल्य .१५

श्रीविष्णुसहस्रनाम–सटीक, मूल्य ... .१२

गजेन्द्रमोक्ष–पदच्छेद, अन्वय और भावार्थसहित, मू० .१२

भीष्मस्तवराज–सटीक, पृष्ठ ४८, मूल्य ... .१२

गायत्रीसहस्रनामस्तोत्र–मूल, पृष्ठ ५२, मूल्य ... .१२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीसीतासहस्रनामस्तोत्र—मूल, पृष्ठ ५२, मूल्य ... .१२
शिवसहस्रनामस्तोत्र—मूल, पृष्ठ ५६, मूल्य ... .१२
श्रीहनुमत्सहस्रनामस्तोत्र—मूल, पृष्ठ ४४, मूल्य ... .१२
श्रीलक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्र—मूल, पृष्ठ ४८, मूल्य ... .१२
श्रीसूर्यसहस्रनामस्तोत्र—मूल, पृष्ठ ४०, मूल्य ... .१२
श्रीगोविन्द-दामोदर-स्तोत्र—मूल, मूल्य ८
गङ्गालहरी—पृष्ठ ४०, मूल्य ८
हनुमानचालीसा—पृष्ठ ३२, मूल्य ८
शिवचालीसा—पृष्ठ २४, मूल्य ८
श्रीनारायणकवच—सानुवाद, पृष्ठ १६, मूल्य ८
अमोघ शिवकवच—सानुवाद, पृष्ठ १६, मूल्य ८
श्रीविष्णुसहस्रनाम—मूल, पृष्ठ ४८, मूल्य ७
शिवमहिम्नःस्तोत्र—पृष्ठ ३२, मूल्य ७
श्रीरामगीता—पृष्ठ ४०, मूल्य ७
सौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्—मूल्य ४
रामरक्षास्तोत्रम्—मूल, मूल्य ४
श्रीकार्पण्यपञ्जिकास्तोत्र—पृष्ठ १६, मूल्य ४
मोहमुद्गर—पृष्ठ १५, मूल्य ४

व्यवस्थापक—गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीमद्भगवद्गीताएँ

मूल्य
रु० पैसे

श्रीमद्भगवद्गीता-तत्त्वविवेचनी–पृष्ठ ६८४, चित्र४;४.००

श्रीमद्भगवद्गीता–शाङ्करभाष्य-सानुवाद, पृष्ठ ५२०,
चित्र ३ ... ३.५०

श्रीमद्भगवद्गीता–रामानुजभाष्य–सानुवाद,
पृष्ठ ६०८, चित्र ३, सजिल्द ... ३.००

श्रीमद्भगवद्गीता–श्रीधरीटीका–सानुवाद, पृष्ठ ५२२,
सचित्र, मूल्य २.५०, सजिल्द ... ३.००

श्रीमद्भगवद्गीता [बड़ी]–पृष्ठ ५७२, चित्र ४ ... १.२५

श्रीमद्भगवद्गीता [मझली]–पृष्ठ ४६८,
चित्र ४, सजिल्द ... १.००

श्रीमद्भगवद्गीता–[गुटका]–पृष्ठ ५९०, सजिल्द .. .७५

श्रीमद्भगवद्गीता [लाहोरी ढंगकी]–पृष्ठ ४२४,
चित्र २, मूल्य १.१०, सजिल्द ...१.५०

श्रीमद्भगवद्गीता [मोटा टाइप]–पृष्ठ ३१६,
सचित्र, मूल्य .६०, सजिल्द ... १.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीमद्भगवद्गीता [मोटे अक्षरवाली]–पृष्ठ २१६,
सचित्र, मूल्य .३१, सजिल्द ... .५६

श्रीमद्भगवद्गीता [केवल भाषा]–पृष्ठ १९२ ... .३०

श्रीपञ्चरत्न-गीता–पृष्ठ-संख्या १८४, मूल्य ... .२५

श्रीमद्भगवद्गीता [पाकेट साइज]–पृष्ठ ३५२,
सचित्र, मूल्य .२०, सजिल्द ... .३५

श्रीमद्भगवद्गीता [तावीजी मूल]–पृष्ठ २९६, ... .२०

श्रीमद्भगवद्गीता–विष्णुसहस्रनामसहित, पृष्ठ १२८,
सचित्र, मूल्य ... .१२

Bhagavadgita–[with Sanskrit tevt and
English translation]
Unbound .35, Bound ... .50

गीताव्याकरणम्–पृष्ठ-संख्या २८०, मूल्य ... १.२५

गीतामें भगवान् श्रीकृष्णका परिचय और
उपदेश–पृष्ठ २८०, सचित्र, मूल्य ... १.२५

गीता-ज्ञान-प्रवेशिका–पृष्ठ-संख्या २१०, मूल्य ... .५०

व्यवस्थापक–गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीमद्भगवद्गीता [मोटे अक्षरवाली]–पृष्ठ २१६,
सचित्र, मूल्य .३१, सजिल्द ... .५६

श्रीमद्भगवद्गीता [केवल भाषा]–पृष्ठ १९२ ... .३०

श्रीपञ्चरत्न-गीता–पृष्ठ-संख्या १८४, मूल्य ... .२५

श्रीमद्भगवद्गीता [पाकेट साइज]–पृष्ठ ३५२,
सचित्र, मूल्य .२०, सजिल्द ... .३५

श्रीमद्भगवद्गीता [ताबीजी मूल]–पृष्ठ २९६, ... .२०

श्रीमद्भगवद्गीता–विष्णुसहस्रनामसहित, पृष्ठ १२८,
सचित्र, मूल्य ... .१२

Bhagavadgita-[with Sanskrit tevt and
English translation]
Unbound .35, Bound ... .50

गीताव्याकरणम्–पृष्ठ-संख्या २८०, मूल्य ... १.२५

गीतामें भगवान् श्रीकृष्णका परिचय और
उपदेश–पृष्ठ २८०, सचित्र, मूल्य ... १.२५

गीता-ज्ञान-प्रवेशिका–पृष्ठ-संख्या २१०, मूल्य ... .५०

व्यवस्थापक–गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi